Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 08, (जनवरी, 2026)
पृष्ठ संख्या 14–16

कृषि से उद्योग तक: किसानों के कृषि आधारित व्यवसाय और आय के अवसर

शोजी लाल बैरवा, इरेया, और पी. नागार्जुन,
सहायक प्राध्यापक सह कनिष्ठ वैज्ञानिक
डॉ. कलाम कृषि महाविद्यालय, अर्राबाड़ी, किशनजगंज,
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, बिहार, भारत।

Email Id: – smabm.bhu@gmail.com

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था का आधार है क्योंकि कृषि बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्यान और रोजगार प्रदान करानें में एक महत्वपुर्ण भूमिका निभाता है। किसान खेती या फसलों उत्पादन के साथ साथ कुछ कृषि आधारित व्यवसाय बनाकर अपनी आमदनी बढ़ा सकता है। एग्रो–बेस्ड बिजनेस वह व्यवसाय है जो कृषि और उससे जुड़े उत्पादों पर आधारित होता है। इसमें फसल उत्पादन, पशुपालन, डेयरी, मछली पालन, बागवानी, प्रोसेसिंग, पैकिंग और मार्केटिंग शामिल हैं। सरल शब्दों में कहें तो यह वह व्यवसाय है जो कृषि उत्पादों की खेती से लेकर उनके मूल्य वर्धन और बिक्री तक जुड़ा होता है। किसानों के लिए इसके लाभ निम्नलिखित हैं:

1. फसल की खेती के अलावा उत्पादों का मूल्य वर्धन करके किसान अधिक लाभ कमा सकते हैं।
2. केवल एक फसल पर निर्भर रहने की बजाय विभिन्न व्यवसायिक अवसर अपनाकर जोखिम कम किया जा सकता है।
3. छोटे पैमाने पर प्रोसेसिंग, पैकेजिंग और कृषि सेवा व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार पैदा करते हैं।
4. एग्रो–बेस्ड बिजनेस से किसान सीधे उपभोक्ताओं या संस्थानों तक पहुंच सकते हैं, जिससे मुनाफा बढ़ता है।

प्रमुख कृषि आधारित उद्योग

कृषि आधारित अनेक प्रकार के व्यवसाय किये जा सकते है लेकिन निम्नलिखित किसानों /प्रगतीशील किसानों या युवाओं के लिए उपयुक्त है क्योंकि इसमे कम पुंजी और कम प्रशिक्षण के साथ–साथ कम आधुनिक तकनीक की भी आव यकता होती है।

1. **मशरूम उत्पादन:** कम समय मे ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए किसान भाई मशरूम उत्पादन को व्यवसाय के तौर पर अपना सकते है। कम पुंजी के साथ घर या फार्म पर कम स्थान मे ही मशरूम उत्पादन का काम किया जा सकता हैं। पोस्टिक गुणों की वजह से मशरूम की मांग लगाातार घरेलु बाजार में बढ़ती ही जा रही है। होटलों, रेस्टोरेन्टस तथा भाहरी परिवारों में मशरूम की मांग हमेशा बनी ही रहती है इसके बाजार भाव लगभग 250 से 300 रू प्रति किलोग्राम होता है।
2. **ऑर्गेनिक खाद/केंचुआ खाद:** केचूंआ खाद उत्पादन भी किसानों के लिए एक लाभदायक व्यवसाय है क्योंकि इसमें फसल अवषेशों का उपयोग करके अच्छे पोषक तत्वों वाली ओर्गेनिक खाद बना सकते है जिसका खेती में भी उपयोग कर सकते है तथा अतिरिक्त खाद को बेच कर आमदनी भी बढ़ा सकते है। वर्मी कम्पोस्ट यूनिट में पूंजी की आव यकता भी कम होती है जिससे किसान इस व्यवसाय को आसानी से शुरू कर सकते है। केचूंआ खाद उत्पादन के बारे में कृषि विज्ञान केन्द्र से वैंज्ञानिक प्रशिक्षण भी प्राप्त किया जा सकता है ।

3. **डेयरी फार्म:** पशु पालन भारतवर्ष में एक पारिवारिक व्यवसाय रहा है। खेती के साथ साथ पशु पालन एक लाभदायक कदम होता है जिसमे किसान गाय या भैंस पालन करके अपनी आमदनी बढा सकता है दुध और दुध उत्पादों की मांग हमेशा बाजर में बनी रहती है। बड़े स्तर पर डेयरी फार्म शुरू करने से पहले किसान नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि कॉलेज से प्रशिक्षण प्राप्त कर लें ताकि वैज्ञानिक पहलु की जानकारी हो सकें ।
4. **मक्का का प्रस्संकरण:** बिहार में मक्का उत्पादन ज्यादा होता है और किसानों को व्यापारियों के पास कम दाम में बेचना पड़ता है लेकिन किसान आपस में मिलकर मक्का का प्रोसेसिंग करके जानवरों का भोजन (फीड) तैयार करले तो उनका मुनाफा कई गुणा बढ़ सकता है।
5. **पॉल्टी फार्म :** मुर्गी पालन भी एक लाभदायक व्यवसाय है जिसमें किसान फसल उत्पादन के साथ – साथ मुर्गी पालन से अतिरिक्त आमदनी कर सकता है अण्डे और मांस की बाजार मे हमेशा मांग बना रहता है जिससे खेती के अलावा अतिरिक्त मुनाफा कमाया जा सकता है ।
6. **बकरी पालन :** यह भी एक आमदनी का अच्छा स्त्रोत है दुध की पारिवारिक जरूरत को पुरा करने के अलावा मीट और दुध के रूप मे आमदनी बढा सकता है राजस्थान में बकरी पालन जिविका का अच्छे स्त्रोत है।
7. **मछली पालन :** बिहार और बंगाल में मछली पालन का एक लोकप्रिय और बढता हुआ व्यवसाय है क्योंकि यहॉ बहुत से पोखर, तालाब और नदियों के रूप मे मछली पालन के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधन मौजुद है। किसान अपने परिवार के लिए और अतिरिक्त आमदनी के लिए मछली पालन को अपना सकते है। सरकार भी कई प्रकार की सब्सिडी की सुविधा प्रदान करती है।
8. **संरक्षित खेती (प्रोटेक्टेड कल्टीवेशन):** कृषि व्यवसाय का एक नया तरीका है जिसमे किसान फसलों की मांग के अनुसार वातावरण (तापमान, धुप) को नियत्रित करते हुए महंगी व्यावसायिक फसलों का उतपादन करते है यह मुख्यता सब्जी फसलों के किए उपयुक्त होता है इसमे कीट अवरोधी नेट हाऊस, ग्रीन हाऊस, पॉली हाऊस, प्लास्टिक लो टनल प्लास्टिक हाई टनल प्लास्टिक माल्यंक और ड्रिप सिचाई का इस्तेमाल होता है ।
9. **व्यवसाय के अन्य विकल्प:**
   - प्रगतीशील किसान कृषि विज्ञान केन्द्र और कृषि विभाग के साथ मिलकर प्रमाणीकरण बीज उत्पादन अपनें खेत में कर सकते है। कृषि विज्ञान केन्द्र और कृषि विभाग से प्रशिक्षण लेकर किसान/प्रगतीशील किसान नर्सरी ईकाई शुरू करके अतिरिक्त आमदनी कमा सकते है। धान के नर्सरी पौधौं की मांग बाजार में हमेशा बनी रहती है।
   - चाय के बागान भी एक उभरता हुआ व्यवसाय बिहार में क्योंकि किशनगंज कटिहार पुर्णिया जिला मे बहुत बड़े क्षेत्र मे किसान खेती करते और मुनाफा कमाते है इसमे शुरूआती पूंजी ज्यादा लगती और फसलों का उत्पादन 4–5 साल के बाद शुरू होता है जो 50–60 वर्षों तक उपज देते है।
   - ड्रैगन फ्रुट की खेती भी बिहार में एक लाभदायक व्यवसाय के रूप मे उभर रहा है इसमें शुरूआती पूंजी की अधिक जरूरत होती है लेकिन अच्छा बाजार भाव और लम्बे समय तक उपज देने की वजह से एक लाभदायक व्यवसाय के रूप उभर रहा है। कीट और व्याधियों पर होने वाला खर्च भी कम होता है जिसकी वजह से बिहार में ड्रैगन फ्रुट की खेती किसानों को पसन्द आ रही है।
   - किसान आपस में मिलकर 'किसान उत्पादक संघ' बनाकर प्रोसेसिंग और विपणन का फायदा उठा सकता है। आज कल राज्य सरकारें ऐसे सहकारी संगठनों और समितियों को बढ़ावा देने

हेतु सब्सिडी और ऋण जैसे वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है ।

तालिका 1: बिहार में कृषि आधारित प्रमुख उद्योग

क्र. सं	कृषि आधारित उद्योग	विवरण	बिहार संदर्भ में विशेष टिप्पणियाँ
1.	**फल और सब्जी उद्योग**	आम, लीची, केला, अमरूद, आलू, टमाटर, बैंगन का उत्पादन	बिहार में लीची, आम और केला प्रमुख हैंय सीजन अनुसार बिक्री से अधिक लाभ संभव
2.	**डेयरी उद्योग**	गाय और भैंस से दूध, दही, घी, पनीर का उत्पादन	डेयरी फार्मिंग पूर्वी बिहार (मोतिहारी, दरभंगा) में लाभकारीय महिला स्वरोजगार में सहायक
3.	**पशुपालन और पोल्ट्री**	अंडा और मांस उत्पादनय भेड़–बकरी	पालन पोल्ट्री और मांस उत्पादन तेजी से बढ़ रहा हैय छोटे किसान भी लाभ कमा सकते हैं
4.	**मछली पालन और जल कृषि**	तालाब/नहर में मछली (रोहू, कतला, कार्प) और झींगा पालन	बिहार में कटिहार, भागलपुर, पूर्णिया में मछली पालन लोकप्रियय घरेलू और बाजार दोनों में मांग
5.	**अनाज और दाल उद्योग**	धान, गेहूँ, मक्का, अरहर, मूँग उत्पादनय आटा, बेसन प्रोसेसिंग	धान और गेहूँ का उत्पादन प्रमुखय मिलिंग और प्रोसेसिंग से मूल्य वर्धन संभव
6.	**बीज और कृषि इनपुट**	प्रमाणित बीज, जैविक/रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक	किसानों के लिए थोक में उपलब्ध करना लाभकारीय उच्च गुणवत्ता वाले बीज पर सब्सिडी
7.	**जड़ी–बूटी और औषधीय पौधे**	हल्दी, अदरक, आंवला, तुलसी, अश्वगंधा	बिहार में हल्दी, अदरक और आंवला की मांग बढ़ रही हैय आयुर्वेदिक उद्योग में उपयोग।
8.	**बागवानी और फूल उद्योग**	गुलाब, गेंदा, कमलय सजावटी पौधे	बागवानी में मध्यम निवेशय फूलों का घरेलू और शहरी बाजार में लाभ।
9.	**कृषि सेवा उद्योग**	कृषि परामर्श, प्रशिक्षण, मशीन/यंत्र किराया, डिजिटल खेती	बिहार में FPO और CHC के माध्यम से साझा सेवाएँ किसान सहयोगी सिद्ध हो रही हैं।
10.	**मूल्य वर्धन और प्रोसेसिंग**	जूस, जैम, मुरब्बा, फ्रोजन फूड, पैकेजिंग	बिहार में प्रोसेसिंग उद्योग विकासशीलय किसानों के लिए उच्च मूल्य वर्धन अवसर

स्रोतः विभिन्न स्रोतों से संकलित, 2025

निष्कर्ष एंव सुझाव

कृषि केवल परंपरागत खेती तक सीमित नहीं रह गई है। आज किसान अपनी आय बढ़ाने, रोजगार सृजन करने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए कृषि आधारित उद्योग को अपना सकते हैं। यह व्यवसाय फसल उत्पादन से लेकर मूल्य वर्धन, प्रोसेसिंग, पैकेजिंग और विपणन तक विभिन्न अवसर प्रदान करता है। बिहार जैसे कृषि प्रधान राज्य में फल, सब्जी, डेयरी, पोल्ट्री, मछली पालन और जड़ी–बूटी उद्योग में निवेश कर किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं और आत्मनिर्भर बन सकते हैं। एग्रो–बेस्ड बिजनेस अपनाने से किसान न केवल अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं, बल्कि कृषि उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार, बाजार तक सीधे पहुँच और जोखिम में कमी जैसी उपलब्धियाँ भी हासिल कर सकते हैं। स्थानीय बाजार और मांग का विश्लेषण करें तथा व्यवसाय शुरू करने से पहले यह जानना आवश्यक है कि कौन–सा उत्पाद ज्यादा लाभकारी होगा। छोटे स्तर से शुरुआत करें। पहले सीमित निवेश से व्यवसाय शुरू करें और अनुभव के बाद विस्तार करें। मोबाइल एप्स, ड्रोन, सेंसर और इंटरनेट आधारित मार्केटिंग से निर्णय बेहतर बनते हैं।